

Chapter-2

दोपहर का भोजन

प्रश्न 1.

सिद्धेश्वरी ने अपने बड़े बेटे रामचंद्र से मँझले बेटे मोहन के बारे में झूठ क्यों बोला?

उत्तर:

घर की स्थिति सही नहीं चल रही थी। रामचंद्र की नौकरी छूट गई थी। उसी के पैसों से घर चल रहा था। ऐसे में जब थका-हारा रामचंद्र बाहर से आकर मोहन के बारे में पूछने लगा, तो सिद्धेश्वरी को झूठ बोलना पड़ा। वह रामचंद्र को यह नहीं बता सकती थी कि मोहन पढ़ने के स्थान पर आवारागर्दी कर रहा है। मोहन पढ़ने के स्थान पर समय नष्ट कर रहा था। अतः यह झूठ बोलकर वह घर में शांति बनाए रखना चाहती थी।

प्रश्न 2.

कहानी के सबसे जीवंत पात्र के चरित्र की दृढ़ता का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

उत्तर:

कहानी का सबसे जीवंत पात्र सिद्धेश्वरी है। वह जानती है कि घर की स्थिति सही नहीं है। खाने के लिए प्रयाप्त भोजन नहीं है। फिर भी वह स्थिति को संभाले रखती है। घर में किसी को पता नहीं चलने देती कि घर में खाने के लिए भोजन नहीं है। वह जानती है कि परिवारजन सच्चाई से वाकिफ हैं लेकिन अपने झूठ से वह उनके अंदर विश्वास कायम रखती है। वह परिवारजनों के मध्य भी प्रेमभाव को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास कर रही है। सबके मन हालातों से टूटे हुए हैं लेकिन वह इन टूटे हुए सभी मन को अपने झूठ से संभाले हुए रखती है।

प्रश्न 3.

कहानी के उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जिनसे गरीबी की विवशता झाँक रही हो।

उत्तर:

निम्नलिखित प्रसंगों से गरीबी की विवशता झाँक रही है-

(क) लड़का नंग-धड़ंग पड़ा था। उसके गले तथा छाती की हड्डियाँ साफ़ दिखाई दे रही थी। उसके हाथ-पैर बासी ककड़ियों की तरह सूखे, बेजान पड़े थे और उसका पेट हँडिया की तरह फूला हुआ था।

(ख) बच्चे के मुँह पर अपना एक फटा, गंदा ब्लाउज़ डाल दिया।

(ग) बटलोई की दाल को कटोरे में उँड़ेल दिया, पर वह पूरा भरा नहीं। छिपुली में थोड़ी-सी चने की तरकारी बची थी, उसे पास खींच लिया। रोटियों की थाली को उसने पास खींच लिया, उसमें केवल एक रोटी बची थी। मोटी, भद्दी और जली उस रोटी को वह जूठी थाली में रखने जा रही रही थी कि अचानक कुछ देर तक एकटक देखा, फिर रोटी को दो बराबर टुकड़ों में विभाजित कर दिया। एक टुकड़े को तो अलग रख दिया और दूसरे टुकड़े को अपनी जूठी थाली में रख लिया। तदुपरांत एक लोटा पानी लेकर खाने बैठ गई। उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से आँसू चूने लगे।

(घ) सारा घर मक्खियों से भनभन कर रहा था। आँगन में अलगनी पर एक गंदी साड़ी टँगी थी, जिसमें कई पैबंद लगे हुए थे।

प्रश्न 4.

‘सिद्धेश्वरी का एक दूसरे सदस्य के विषय में झूठ बोलना परिवार को जोड़ने का अनथक प्रयास था’ – इस संबंध में आप अपने विचार लिखिए।

उत्तर:

सिद्धेश्वरी जानती थी कि घर की स्थिति को लेकर घर का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे से खींचा हुआ था। वह झूठ बोलकर उसे सामान्य करने का प्रयास करती है। हम यह नहीं कह सकते कि यह प्रयास अनथक था या अथक। वह प्रयास अवश्य कर रही थी। पिता उसके मुँह से तारीफ को सुनकर प्रसन्न हो गए थे। कठिन समय में यही तारीफ घरवालों को आपस में बाँधे हुए थी। मोहन और रामचंद्र के मध्य अवश्य एक खींचतान दिखाई देती है लेकिन सिद्धेश्वरी अपने झूठ से उसे भी कम करने का प्रयास करती है। यदि वह ऐसा न करे, तो घर में सब बिखर कर रह जाए। वह

जहाँ-तहाँ यह प्रयास करते हुए दिखाई देती है। इस तरह अपने घर को एक किए हुए है। अतः इसे अनथक प्रयास नहीं कहा जा सकता है।

प्रश्न 5.

‘अमरकांत आम बोलचाल की ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं जिससे कहानी की संवेदना पूरी तरह उभरकर आ जाती है।’ कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

अमरकांत की भाषा आम बोलचाल की भाषा है। इसमें बनावट का लेशमात्र नहीं है। वे बड़े सहज रूप में बात कह जाते हैं। उदाहरण के लिए-

सिद्धेश्वरी ने पूछा, ‘बड़का की कसम, एक रोटी देती हूँ। अभी बहुत-सी हैं।’

मुंशी जी ने पत्नी की ओर अपराधी के समान तथा रसोई की ओर कनखी से देखा, तत्पश्चात किसी घुटे उस्ताद की भाँति बोले, ‘रोटी..... रहने दो, पेट काफ़ी भर चुका है। अन्न और नमकीन चीज़ों से तबीयत ऊब भी गई है। तुमने व्यर्थ में कसम धरा दी। खैर, रखने के लिए ले रहा हूँ। गुड़ होगा क्या?’

इसमें लेखक ने ‘कनखी’, ‘घुटे उस्ताद’, ‘बड़के धरा दी’ जैसे शब्दों का प्रयोग कर भाषा को सजीव बना दिया है।

प्रश्न 6.

रामचंद्र मोहन और मुंशी जी खाते समय रोटी न लेने के लिए बहाने करते हैं, उसमें कैसी विवशता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

सब जानते हैं कि घर में पेटभर भोजन करने के लिए अन्न नहीं है। सिद्धेश्वरी रोटी देने पर ज़ोर डालकर उन्हें यही साबित करना चाहती है कि अन्न भरा पड़ा है। किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। रामचंद्र तथा मुंशी जी स्थिति से वाकिफ़ हैं। वे रोटी न लेने के लिए बहाने बनाकर सिद्धेश्वरी को धोखा देने का प्रयास करते हैं कि उन्हें भूख नहीं है। यह उनकी विवशता है कि वे आधे पेट होने पर भी पेट भरे होने की बात कह रहे हैं। यह उनकी गरीबी है, जो उनसे झूठ बुलवा रही है।

प्रश्न 7.

सिद्धेश्वरी की जगह आप होते तो क्या करते?

उत्तर:

सिद्धेश्वरी की जगह हम होते तो हम भी वही करते, जो सिद्धेश्वरी ने किया। सिद्धेश्वरी के रूप में महिला हो या फिर कोई पुरुष, अपने परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल करना और घर का उचित प्रबंध करना, हर घर के मुख्य सदस्य की जिम्मेदारी होती है। सिद्धेश्वरी अपने घर की मुख्य महिला थी और वह अपने घर के सदस्यों की सीमित आय में ही अपने घर का उचित प्रबंध प्रबंधन कर रही थी। हम भी यदि सिद्धेश्वरी की जगह होते चाहे महिला के रूप में या पुरुष के रूप में हम भी सिद्धेश्वरी की तरह करने का प्रयत्न करते, ये हमारा पारिवारिक दायित्व होता। अपने परिवार के सदस्यों की हित के लिए अपनी तरफ से कुछ त्याग करना थोड़ी तकलीफ सहना पारिवारिक रिश्ते को मजबूत करता है। सुख-दुख और उतार-चढ़ाव पारिवारिक जीवन का हिस्सा है, ऐसे में कठिन समय को सूझ-बूझ और कुशलतापूर्वक निकाला जाता है, ताकि अच्छे समय का आधार तैयार किया जा सके। सिद्धेश्वरी भी अपनी सूझ-बूझ से कठिन समय को निकाल रही थी, हम होते तो यही करते।

प्रश्न 8.

रसोई संभालना बहुत जिम्मेदारी का काम है - सिद्ध कीजिए।

उत्तर:

रसोई में जितनी भी सामग्री हो गृहणी को इतने में ही सभी सदस्यों को ध्यान में रखकर पूरी स्थिति का समावेश किया जाता है। अगर पर्याप्त सामग्री हों तब चिंता की बात बिल्कुल भी नहीं होती लेकिन सामग्री भूत कम हो और सदस्यों को पूरे न पड़े तो गृहणी की परीक्षा हो जाती है। ऐसे में कुशल गृहणियां अपनी जिम्मेदारी की परीक्षा बड़े लगन और मेहनत से देती हैं। अपनी जान की परवाह नहीं करती।

प्रश्न 9.

आपके अनुसार सिद्धेश्वरी के झूठ सौ सत्यों से भारी कैसे हैं? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर:

सिद्धेश्वरी ने जो भी झूठ बोले वह अपने परिवार के मध्य एकता, प्रेम और शांति स्थापित करने के लिए बोले थे। उसके झूठों में किसी प्रकार का स्वार्थ विद्यमान नहीं था। उसके झूठ एक भाई का दूसरे भाई के प्रति, बच्चों का पिता के प्रति तथा पिता की बच्चों के प्रति आपसी समझ और प्रेम

बढ़ाने के लिए बोले गए थे। इस तरह वह परिवार को मुसीबत के समय एक बनाए रखने का प्रयास करती है। अतः उसके झूठ सौ सत्यों से भारी हैं। झूठ वह कहलाता है, जिससे किसी का नुकसान हो। इन झूठों से किसी का नुकसान नहीं था। परिवार को जोड़े रखने का ये माध्यम थे। ये झूठ अच्छी भावना लेकर बोले गए थे। अतः ये सौ सत्य से बहुत अच्छे हैं।

प्रश्न 10.

आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गट-गट चढ़ा गई।

(ख) यह कहकर उसने अपने मँझले लड़के की ओर इस तरह देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।

उत्तर:

(क) सिद्धेश्वरी को अचानक याद आया कि उसे पानी ,की प्यास लगी है। अतः वह ऐसे उठी मानो वह मतवाली हो गई है। उसने उसी अंदाज़ में घड़े में लोटा डाला और उससे गटा-गटा पानी पी गई।

(ख) सिद्धेश्वरी ने मोहन को यह झूठ बोला कि बड़ा भाई उसकी तारीफ़ कर रहा था। मोहन जानता था कि उसका बड़ा भाई उसकी तारीफ़ नहीं कर सकता है। अतः सिद्धेश्वरी ने झूठ बोलकर मोहन की ओर देखा। वह यह जानना चाहती थी कि कहीं मोहन ने उसका झूठ पकड़ तो नहीं लिया है।